नींबू तथा लीची के बागों से अधिक उपज हेतु एडवाइजरी जारी

दि ग्राम टुडे, कानपुर।

(मीनाक्षी राहुल सोनकर)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में उद्यान विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ विवेक कुमार त्रिपाठी ने इस समय नींबू तथा लीची के बागानों में विभिन्न औधानिक क्रियाएं जिनसे अधिक उपज, गुणवत्ता और उत्पादन प्राप्त हो एडवाइजरी जारी की है। डॉ त्रिपाठी का कहना है कि इस समय नींबू वर्गीय विभिन्न फलों जैसे संतरा किन्नू मुसम्मी कागजी नींबू इत्यादि फल विकास की अवस्था में है, इन फलों को इस समय गिरने से बचाने के लिए पौधे पर नेप्थलीन एसिटिक एसिड कि 50 मिलीग्राम दवा या प्लानोफिक्स 4.5त्न की 0.5 मिली लीटर दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करने से फलों के फटने की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। फलो का फटना तापक्रम के विकास से भी सीधा संबंधित है अतः फलों की तुड़ाई होने तक पौधों के पास हल्की नमी बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। जिसके लिए 3-4 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई करने के साथ-साथ पौधों के पास पलवार बिछा देते हैं जिससे नमी संरक्षित रहती है।पौधों पर 5 ग्राम बोरेक्स तथा 5 ग्राम जिंक सल्फेट को 1 लीटर पानी में घोलकर, फलो पर छिड़काव करने से फलों के फटने की प्रक्रिया को कम किया जा सकता है।

डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि प्रदेश में कई स्थानों पर लीची भी बहुतायत में उगाई जाती है, लीची के फल विकास की अवस्था में है। लीची के फलों में फल बेधक कीट का प्रकोप हो तो फसल पर थिआक्लोप्रिड 0.75 की 1 मिलीलीटर दवा अथवा नोबाल्यूरान की 1.5 मिलीलीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 14 | अंकः 189
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12
शनिवार | 22 अप्रैल, 2023

अधिक उत्पादन के लिए सीएसए ने जारी की एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। नींबू वर्गीय विभिन्न फलों जैसे संतरा किन्नू, मुसम्मी, कागजी नींबू आदि फल इस समय विकास की अवस्था में है। जिनके बागानों में विभिन्न औधानिक क्रियाओं के माध्यम से अधिक उपज, गुणवत्ता और उत्पादन

प्राप्त करने संबंधी विषय पर बीते दिन शुक्रवार को सीएसएयू के उद्यान विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक कुमार त्रिपाठी द्वारा एडवाइजरी जारी की गई। डॉ.त्रिपाठी ने बताया कि फलों के इस विकास की अवस्था में उन्हें गिरने से बचाने के लिए पौधे पर नेप्थलीन एसिटिक एसिड की 50 मिलीग्राम दवा या प्लानोफिक्स 4.5 फीसदी की 0.5 मिली लीटर दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करने से फलों के फटने की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि फलों की तुड़ाई होने तक पौधों के पास हल्की नमी बनाए रखना आवश्यक है। जिसके लिए 3-4 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई करने के साथ-साथ पौधों के पास पलवार बिछा देनी चाहिए। जिससे नमी संरक्षित रहती है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में कई स्थानों पर लीची भी बहुतायत में उगाई जाती है जिसके फल भी इस समय विकास की अवस्था में है।

सीएसए में नींबू व लीची के बागों से अधिक उपज हेतु एडवाइजरी जारी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में उद्यान विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ विवेक कुमार त्रिपाठी ने इस समय नींबू तथा लीची के बागानों में विभिन्न औधानिक क्रियाएं जिनसे अधिक उपज, गुणवत्ता और उत्पादन प्राप्त हो एडवाइजरी जारी की है। डॉ त्रिपाठी का कहना है कि इस समय नींबू वर्गीय विभिन्न फलों जैसे संतरा किन्नू मुसम्मी कागजी नींबू इत्यादि फल विकास की अवस्था में है, इन फलों को इस समय गिरने से बचाने के लिए पौधे पर नेप्थलीन एसिटिक एसिड कि 50 मिलीग्राम दवा या प्लानोफिक्स 4.5 प्रतिशत की 0.5 मिली लीटर दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करने से फलों के फटने की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। फलों का फटना तापक्रम के विकास से भी सीधा संबंधित है अतः फलों की तुड़ाई होने तक पौधों के पास हल्की नमी बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। जिसके लिए 3-4 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई करने के साथ-साथ पौधों के पास पलवार बिछा देते हैं जिससे नमी संरक्षित रहती है। पौधों पर 5 ग्राम बोरेक्स तथा 5 ग्राम जिंक सल्फेट को 1 लीटर पानी में घोलकर, फलो पर छिड़काव करने से फलों के फटने की प्रक्रिया को कम किया जा सकता है। डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि प्रदेश में कई स्थानों पर लीची भी बहुतायत में उगाई जाती है, लीची के फल विकास की अवस्था में है। लीची के फलों में फल बेधक कीट का प्रकोप हो तो फसल पर थिआक्लोप्रिड 0.75 की। एक मिलीलीटर दवा अथवा नोबाल्यूरान की 1.5 मिलीलीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। पौधों में 300 ग्राम पोटाश प्रति पौधा डालने से फलों की मिठास और गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।